जय जिनेन्द्र

पाठशालाएँ ज्ञान का मंदिर है। यहाँ से बच्चों में सुसंस्कारों का निर्माण होता है।
और बच्चे सामाजिक व्यवहारिक जीवन के लिए तैयार होते हैं।
हमारे आचार्यों द्वारा जिनवाणी के माध्यम से कहे गए सूत्रों को जीवन में
रखने की बात समझाई जाती है। ये ही वो जगह है जहाँ से ज्ञान प्राप्त
कर हम धर्म की सम्यक आराधना कर सकते हैं। हम सभी का आवश्यक
मोक्ष प्राप्त करना है और सम्यक ज्ञान के बिना असंभव है।
धर्म के मूलभूत सिद्धांतों की जानकारी के बिना बच्चे धर्म से विमुख हो
जाते हैं जैसे पानी छानकर पीना, नित्य देव दर्शन, 8 मूलगुणों का पालन,
7 तत्व, 9 पदार्थ आदि का ज्ञान यहीं से मिलता है।
भक्ष्य अभक्ष्य की जानकारी देना। धर्मनिष्ठ संस्कारों से आत्मा को पल्लवित
किए बिना धर्ममय जीवन संभव नहीं है।
सम्यग्ज्ञान की ज्योति को विकसाने में पाठशाला का बहुत बड़ा योगदान रहता है
जिस मानव में सद्ज्ञान नहीं वह मानव-मानव नहीं है। जीवन जीने की कला
पाठशाला सिखाती है। पढ़ाने वाले गुरु भी ऐसे हों जो स्वयं सम्यक आचरण रखते
हों जो कहते हों वो करते हों उस पर जीते हों। सेवा साधना करते [illegible]
पाठशाला से जीवन सुगम, सहज बनता है। सुसंस्कारों से परिवार, समाज, धर्म
की गरिमा बढ़ती है। पाठशाला एक फैक्ट्री है जो सदाचारी, सुसंस्कारी व्यक्ति
का निर्माण करती है। बच्चों में भौतिक संसाधनों के स्थान पर संस्कारों की
सौगात देती है। बच्चों का मन लगे उनके मनोरंजन भी हो खेल,
नृत्य, संगीत आदि द्वारा पढ़ाए। धार्मिक हो जो तीर्थयात्रा कराए।
बचपन से ही बच्चों को पाठशाला भेजे जिससे उनके जीवन का मार्ग
प्रशस्त हो सही आचरण पूर्वक जीए, व्यवहारिक ज्ञान, सदाचार उनके
जीवन में हो सही गलत को जान सके। रूढ़िवादी न बने।
कट्टरवाद को बढ़ावा ना मिले। हमें अपने बच्चों को एक सच्चा जैन
बनाना होगा। आगे चलकर वो व्रत प्रतिमा धारण करें और अपने इस
मनुष्य जन्म को सफल करे अपनी श्रद्धा सम्यक करें। अगर पंडित
और अपनी मंजिल को प्राप्त करे। एक बालक जो पाठशाला से
बनकर निकलता है तो आगे चलकर वो और पंडितों को जन्म देगा।
जिससे हमारी समाज और न्याय, नीति, सौहार्द, सेवा, विनय पूर्वक
उन्नति के मार्ग पर बढ़ेगा। अतः पाठशाला की एक अहम भूमिका
जो मानव को महामानव बनाती है।

जय जिनेन्द्र
अल्पा चोपड़ा